युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 48वीं एवं राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की तृतीय पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में आयोजित

साप्ताहिक श्रद्धांजलि समारोह (दिनांक 4सितम्बर से 10सितम्बर,2017 तक)

प्रेस विज्ञप्ति

गोरखपुर, 10 सितम्बर। **युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 48वीं एवं राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज** की तृतीय पुण्यतिथि समारोह में **राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज** की स्मृति में **मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री राम नाईक जी** ने दोनों पीठाधीश्वरों को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि आज का दिन मेरे लिये स्मरणीय दिवस है। रण संग्राम में देश के ऊपर शहीद होने वाले वीर अब्दुल हमीद के गांव में श्रद्धांजलि देकर सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में कार्य करने वाले ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं राष्ट्रसन्त महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज को एक साथ श्रद्धांजलि देने का सौभाग्य आज मुझे प्राप्त हुआ है। इन दोनो महापुरूषों ने राष्ट्र, राष्ट्रधर्म, संस्कृति और व्यक्तित्व विकास एवं योग्य नागरिक का निर्माण पर केवल प्रवचन नहीं अपितु उसे व्यवहार में लाने का कार्य किया है। जिन लोगों को धर्म के वास्तविक जानकारी नहीं वे धर्म के बारें में तमाम प्रश्न खड़ा करते हैं। ऐसे लोगों को धर्म समझने के लिए इस गोरक्षपीठ में आकर देखना चाहिए। उन्हें धर्म का वास्तविक अर्थ समझ में आ जायेगा। धर्म की भारतीय अवधारणा को इस पीठ ने व्यवहारिक रूप में जमीन पर उतारा है। इस पीठ ने समाज को यह बताया है कि भारत के हिन्दु सनातन संस्कृति का मठ और मन्दिर कैसा होता है। समाज को उस मठ–मन्दिर से क्या अपेक्षाएं होती है और मठ–मन्दिर समाज को क्या देते हैं। श्रीगोरक्षनाथ मन्दिर भारत में आदर्श मन्दिर का उदाहरण है। जहॉ तक धर्म और राजनीति का प्रश्न का है उसके साक्षात् प्रमाण भगवान कृष्ण है जिन्होंने धर्म के साथ राजनीति के बल पर ही विकसित समाज स्वावलम्बी राष्ट्र की पुर्नप्रतिष्ठा की थी। दुनियां के चार बड़े देशों के बाद आबादी का सबसे बड़ा उत्तर प्रदेश का नेतृत्व आज इस पीठ के हाथ में ही है। देश सर्वोत्तम प्रदेश बनाने का जो प्रयत्न मुख्यमंत्री के रूप में महन्त योगी आदित्यनाथ जी कर रहे है वह इस पीठ की राष्ट्र एवं समाज के प्रति संकल्पित धारणा का ही प्रतिफल है। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के साथ लोक सभा में कार्य करने का मुझे सौभाग्य मिला था। उनका स्वअनुशासन, कार्य के प्रति निष्ठा, जन सरोकारों के प्रति जवाबदेही, धर्म की राजनीति में प्रतिष्ठा के प्रयत्न, समाज के असहाय, गरीब, दलित, पीड़ित के प्रति उनकी छटपटाहट हम सबको प्रेरणा देती थी। उन्होंने भारतीय संस्कृति के 'चरैवेति–चरैवेति' मंत्र को अपने जीवन में उतारा था। उनको वास्तविक श्रद्धांजलि यहीं होगी कि हम भी स्वयं, परिवार, समाज एवं देश के लिए चलते रहें–चलते रहें– चलते रहें। महायोगी गोरखनाथ की यह तपःस्थली लोक कल्याण, राष्ट्रीय पुर्ननिर्माण और सांस्कृतिक पुर्नजागरण को समर्पित है। इस पीठ ने एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। इस पीठ ने देश ही नहीं दुनियां के धार्मिक केन्द्रो को मार्ग दिखाया है।

अध्यक्षीय उद्बोधन में उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने अपने गुरू को श्रद्धान्जलि देते हुए कहा कि महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज समन्वय, सहनशीलता, संस्कार, प्रखर–राष्ट्रभक्ति, समाज सेवा की प्रतिमूर्ति थे। गोरखनाथ मन्दिर के स्वरूप का जो खाका महन्त दिग्वजयनाथ जी महाराज ने तैयार किया, महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने उसे पूर्ण किया। मध्यकाल में इस पीठ ने अनेक झंझावट झेले है। विदेशी आक्रान्ताओं का यह मन्दिर शिकार हुआ। किन्तु महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने इसके पुराने वैभव को प्राप्त किया। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने उसे और भव्य स्वरूप

दिया। शिक्षा, स्वास्थ्य को सेवा का साधन बनाकर इस पीठ ने जन सेवा को ही भगवान की सेवा मानकर कार्य किया है। 55 से अधिक शिक्षण–प्रशिक्षण, स्वास्थ्य एवं सेवा के संस्थान मन्दिर द्वारा संचालित है। महन्त अवेद्यनाथ जी महराज ने भारतीय सनातन धर्म एवं संस्कृति में प्रतिष्ठित धर्म–स्थलों की भूमिका को वर्तमान युग में साक्षात् प्रस्तुत किया। श्रीराम जन्मभूमि के साथ इस पीठ का जुड़ाव बहुत पहले से है। सन् 1949 भगवान रामलला के प्राकट्य के समय महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की भूमिका जगजाहिर है। 1983 से प्रारम्भ हुये श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति अभियान के महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज नायक बने और उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक इस राष्ट्रीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आन्दोलन से जुड़े रहे। वे कहा करते थे कि समाज में यदि छुआछूत पाप नहीं है तो कुछ भी पाप नहीं है। भारत को महाशक्ति बनने के लिए अपनी सामाजिक विकृतियों से मुक्ति पानी होगी। सामाजिक सामूहिकता के बल पर ही राष्ट्रशक्ति खड़ी की जा सकती है। इस युग में सामाजिक समरता के वे अग्रदूत थे। उन्होंने आगे कहा कि श्रीगोरक्षपीठ अध्यात्मिक और सामाजिक पीठ है यही इसकी विशिष्ट पहचान है और गुरू जी ने अपना पूरा जीवन सनानत धर्म, हिन्दू संरक्षण, शिक्षा, स्वास्थ्य, समतामूलक समाज दीन–दुःखियों के चेहरे पर खुशी लाने और श्रीरामजन्म भूमि मुक्ति के लिए समर्पित कर दिया। देश सेवा, धर्म, हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान के प्रति वे पूर्ण समर्पित थे। सनातन हिन्दू धर्म के लिए उन्होंने पूरा जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने आगे कहा कि मैं हिन्दू समाज को यह आश्वस्त करता हूँ कि श्रीगोरक्षपीठ की राष्ट्र रक्षा का मंत्र हमारे जीवन का मंत्र है। हिन्दू समाज की सेवा और जिन आदर्शो एवं मूल्यों को महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं मेरे गुरूदेव महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने स्थापित किया है उनके प्रति गोरक्षपीठ सदैव समर्पित रहेगा और हम उसे आगे बढ़ाते रहेंगे। सामाजिक एकता के माध्यम से राष्ट्रीय एकता के गुरूदेव सदैव पक्षधर थे। बृहद हिन्दू समाज की एकता ही उनकी सांसारिक उद्देश्य की साधना थी और श्रीगोरक्षपीठ इसे मंत्र मानकर आगे बढ़ता रहेगा।

जगद्गुरू शंकराचार्य स्वामी वासुदेवानन्द जी महाराज कहा कि राष्ट्र–सन्त महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज भारतीय संस्कृति, हिन्दू चिन्तक, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और सामाजिक समरसता के अग्रदूत थे। श्रीगोरखनाथ मन्दिर भारत की संस्कृति, संस्कारों और परम्परा का मन्दिर है। उन्होंने कहा यह पीठ धन्य है, जहाँ ऐसे सन्तों ने अपनी कर्मस्थली बनायी। महन्त अवेद्यनाथ महाराज ने एक ऐसे भारत का स्वप्न देखा जहाँ राष्ट्रवाद, सामाजिक समरसता, हिन्दुत्व और विकास दिखायी दे। वर्तमान उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री आज एक युवा सन्यासी है जिसपर भारत के सन्त समाज को गर्व है। वह इसी पीठ की तपस्या का प्रतिफल है। ऐसा हिन्दू सन्यासी जो बिना किसी भेदभाव के सभी के साथ एक समान व्यवहार करते हुए लोककल्याण के भगीरथ पथ पर चल पड़ा है। प्रदेश में परिवर्तन की जो आध्यात्मिक लहर जो प्रारम्भ हुई है वह निश्चित ही लोक कल्याणकारी एवं लोक मंगल सिद्ध होगी।

श्रीराम जन्म भूमि न्यास के अध्यक्ष मणिराम छावनी, अयोध्या के महन्त नृत्यगोपालदास जी महाराज ने कहा कि देश के सनातन धर्म, हिन्दुत्व, सामाजिक समरसता, रामजन्मभूमि मुक्ति और पूर्वान्चल के शैक्षिक प्रगति के नये आयाम दोनों ब्रह्मलीन महन्त जी ने प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा कि महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज, महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज से लेकर अब महन्त योगी आदित्यनाथ तक, को हिन्दुत्व का संरक्षण विरासत में प्राप्त हुई है। गोरक्षपीठ ने भारत की सांस्कृतिक विरासत को सजोकर रखने एवं देश को धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक नेतृत्व दिया। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज हम सभी साधु–सन्त समाज के सर्वमान्य धर्म नेता थे। नाथ पंथ के इस महान तपस्वी के जीवन में सम्पूर्ण सनातन धर्म दिखता था। उन्होंने कहा कि मैं महन्त जी से सन् 1971 से जुड़ा रहा हूँ। महन्त जी जैसा महापुरूष नहीं देखा, गोरक्षपीठ की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि जब उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री गोविन्दवल्लभ पंत से केन्द्र की सरकार ने रामलला की मूर्ति हटाने को कहा तो गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज गोरखपुर से

हजारों भक्तों को लेकर वहॉ उस स्थान को घेर लिया और आज तक रामलला की मूर्ति हटाने की किसी को साहस नहीं हुआ। रामजन्म भूमि मुक्ति आन्दोलन को गति देने के लिए महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने इसकी अध्यक्षता स्वीकार की और उनके नेतृत्व में आन्दोलन चला।

श्रद्धांजलि सभा में **गीताधाम, जबलपुर से पधारे जगद्गुरू स्वामी डॉ0 श्यामदास जी महाराज** ने कहा कि धर्म के दो आयाम लौकिक और परमार्थिक दोनों को आदर्श रूप में हिन्दू समाज में प्रतिष्ठित करने के लिए महन्त जी ने निरन्तर प्रयत्न किया और हिन्दू समाज का मार्गदर्शन किया। इन्ही दिव्यात्माओं से प्रेरणा लेकर अपने अन्तरंग एवं बहिरंग को शुद्ध कर हिन्दू समाज की सेवा एवं मानवता का कल्याण हम अपने जीवन का लक्ष्य बनाये। यहीं इन सन्तों को वास्तविक श्रद्धांजलि होगी।

दिगम्बर अखाड़ा, अयोध्या के महन्त सुरेशदास जी ने कहा कि गोरखनाथ का भव्य मन्दिर महन्त दिग्विजयनाथ जी की देन है। महन्त अवेद्यनाथ जी कुशल राजनीतिक, सामाजिक समरसता के ध्वजवाहक और रूढ़िवादिता के विरूद्ध संघर्ष करने वाले सन्त थे। ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज सनातन हिन्दू धर्म के पथप्रदर्शक थे। ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने पूर्वान्चल में शिक्षा का जो अभियान महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना कर चलाया था उसे ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने विस्तारित किया। समाज की शक्ति संगठन में है और अवेद्यनाथ जी महाराज ने समाज को संगठित करके शक्तिशाली बनाया।

वशिष्ट आश्रम, अयोध्या के **डॉ0 रामवेलासदास वेदान्ती** ने कहा कि अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन के सर्वमान्य धार्मिक नेता महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज बनें। क्योकि वे पांथिक परम्पराओं से ऊपर राष्ट्रधर्म के सच्चे आराधक थे। वे निर्भय, नीडर, स्पष्टवादी धर्मात्मा थे। सच के साथ दृढ़ता से खड़ा होना उनकी विशेषता थी। वे सहृदय अभिभावक थे। करूणा की वे मूर्ति थे। उनका जीवन संत समाज को सदैव प्रेरणा देता रहेगा।

इस अवसर पर **सिद्ध योग पत्रिका के सम्पादक सिद्ध गुफा सवाई आगरा के ब्रह्मचारी दासलाल जी** ने ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के प्रति श्रद्धान्जलि अर्पित करते हुए कहा कि महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज एक ऐसे महात्मा थे जिन्होंने हिन्दू धर्म संस्कृति के सभी पंथो के प्रति समन्वय का भाव रखते हुए हिन्दू समाज की एकता का अद्वितीय कार्य किया।

इस अवसर पर श्रद्धाजलि देने वालों में नैमिषारण्य से पधारे **स्वामी विद्या चैतन्य जी महाराज,** अरैल, प्रयाग से पधारे स्वामी **गोपाल जी महाराज,** दिगम्बर अखाड़ा, अयोध्या से पधारे **श्री रामशंकरदास जी महाराज,** राजस्थान से पधारे द्वार पीठाधीश्वर **जगद्गुरू वैदेही बल्लभदेवाचार्य जी महाराज,** दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के **मा0 कुलपति प्रो0 विजय कृष्ण सिंह** जी, हरिद्वार से पधारे **महन्त शान्तिनाथ** जी, मुख्य पुजारी, श्रीगोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर के **योगी कमलनाथ जी महाराज,** देवीपाटन मन्दिर, तुलसीपुर से पधारे **महन्त मिथलेशनाथ** जी महाराज, कालीबाड़ी, गोरखपुर के **महन्त श्री रवीन्द्रदास जी महाराज,** श्री हनुमान मन्दिर गोरखनाथ के **महन्त श्री प्रेमदास जी महाराज,** अयोध्या से पधारे **महन्त राममिलनदास** जी, चचाईमठ के **महन्त पंचाननपुरी** जी, प्रदेश के चिकित्सा तकनीकी एवं चिकित्सा शिक्षा मंत्री श्री आशुतोष टण्डन, श्री राकेश सिंह पहलवान, प्रदेश मंत्री भाजपा कामेश्वर सिंह, डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह (क्षेत्रीय मंत्री भाजपा), श्री जर्नादन तिवारी (जिलाध्यक्ष, भाजपा), श्री राहुल श्रीवास्तव (महानगर अध्यक्ष, भाजपा), श्री रविन्द्र कुशवाहा, मा0 सांसद सलेमपुर, श्री कमलेश पासवान, मा0 सांसद–बॉसगॉव, मा0 विधायकगण श्री विपिन सिंह, डा0 राधा मोहन दास अग्रवाल, श्री महेन्द्रपाल सिंह, श्री शीतल पाण्डेय, श्री विमलेश पासवान, श्री देवेन्द्र प्रताप सिंह, श्री ध्रुव कुमार त्रिपाठी, श्री राघवेन्द्र प्रताप सिंह, श्री श्यामधनी राही, श्री राकेश सिंह बघेल व श्री राजेश त्रिपाठी, पूर्व मंत्री, श्री बृजेश यादव, ब्लाक प्रमुख जं0

कौड़िया, श्रीमती अंजू चौधरी, श्रीमती डॉ0 सत्या पाण्डेय, डॉ0 सी0एम0सिन्हा, ई0पी0के0मल्ल आदि ने थे।

कार्यक्रम का प्रारम्भ दोनों ब्रह्मलीन महाराज जी के चित्र पर पुष्पांजलि से हुआ। श्री रंगनाथ त्रिपाठी ने वैदिक मंगलाचरण तथा डॉ0 प्रांगेश मिश्र ने महन्त अवेद्यनाथ स्त्रोतपाठ प्रस्तुत किया। महाराणा प्रताप बालिका विद्यालय की छात्राओं द्वारा श्रद्धान्जलि गीत प्रस्तुत की गयी। कार्यक्रम का संचालन श्री माधवेन्द्रराज ने किया।

विमर्श पत्रिका विमोचन

इस अवसर पर महाराणा प्रताप पी0जी0 कालेज जंगल धूसड़ द्वारा प्रकाशित ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज स्मृति व्याख्यानमाला के व्याख्यानों का एवं शोध पत्रों का संकलन, **डा0 प्रदीप राव** द्वारा सम्पादित नये स्वरूप में प्रकाशित पत्रिका **'विमर्श 2017'** का विमोचन माननीय श्री राज्यपाल राम नाईक जी एवं माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज द्वारा किया गया।

नाथ साहित्य परम्परा और प्रदेय का लोकार्पण

प्रो0 आर0डी0राय के निर्देशन में डॉ0 विनय प्रकाश राय द्वारा पूर्ण किये गये शोध प्रबन्ध का 'नाथ साहित्य परम्परा और प्रदेय' नाम से प्रकाशित पुस्तक का विमोचन माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज द्वारा किया गया।